मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» मुद्रित दुनिया का अपना इतिहास

प्रश्न 1 (आसान). 'मुद्रित दुनिया का अपना इतिहास' का मतलब क्या है?
उत्तर – छपाई की यात्रा–कब शुरू हुई, कैसे फैली, और समाज पर उसका प्रभाव क्या पड़ा।

प्रश्न 2 (आसान). छपाई अचानक क्यों नहीं आई मानी जाती?
उत्तर – क्योंकि उसके लिए समय-क्रम और फैलाव की ऐतिहासिक प्रक्रिया होती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). छपाई के प्रसार से समाज में क्या बदलाव आ सकता है?
उत्तर – जानकारी तेजी से और ज्यादा लोगों तक पहुँचती है, विचार/ज्ञान का प्रभाव बढ़ता है, और जीवन के तरीके बदलते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). आधुनिक दुनिया के निर्माण में मुद्रण की भूमिका समझने के लिए हमें इतिहास क्यों देखना चाहिए?
उत्तर – क्योंकि मुद्रण का प्रभाव सिर्फ तकनीक पर नहीं, बल्कि उसके प्रसार और सामाजिक बदलावों के ऐतिहासिक क्रम पर आधारित है; उसी से आधुनिक दुनिया की शक्ल बनी।

» चीन-जापान-कोरिया की शुरुआती छपाई तकनीकें

प्रश्न 5 (आसान). चीन में शुरुआती छपाई हाथ से होती थी। क्या छपाई लकड़ी के 'ब्लॉक/तख्ती' पर होती थी?
उत्तर – हाँ, काठ के ब्लॉक/तख्ती पर स्याही लगाकर कागज़ रगड़कर छाप बनाई जाती थी।

प्रश्न 6 (आसान). जापान की 'डायमंड सूत्रा' (868 ई.) में क्या-क्या साथ छपा था?
उत्तर – पाठ के साथ-साथ काठ पर खुदे चित्र।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर कागज़ पतला और छिद्रित हो, तो दोनों तरफ छपाई में क्या समस्या आती है?
उत्तर – दोनों तरफ छपाई संभव नहीं रहती क्योंकि कागज़ के छिद्र/पतलेपन से सही छाप दोनों तरफ एक साथ बनना मुश्किल हो जाता है।

प्रश्न 8 (कठिन). चीन में 'राजतंत्रा' लंबे समय तक सबसे बड़ा उत्पादक क्यों था? 1-2 कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि सिविल सेवा परीक्षा के लिए नौकरशाही विशाल थी, राज्य उसी परीक्षा/प्रशासन की जरूरत के लिए बड़ी मात्रा में किताबें छपवाता था; परीक्षा देने वालों की संख्या बढ़ने पर छपी किताबों की मात्रा भी बढ़ जाती थी।

» किताबों का बाजार और यूरोप में मांग का बढ़ना

प्रश्न 9 (आसान). यूरोप में किताबों की माँग बढ़ने पर पुस्तक-विक्रेता क्या करने लगे?
उत्तर – वे अलग-अलग देशों में किताबों का निर्यात/आपूर्ति करने लगे।

प्रश्न 10 (आसान). किताबों के लिए यूरोप में किस तरह की जगहें बनने लगीं?
उत्तर – अलग-अलग जगहों पर पुस्तक मेले लगने लगे।

प्रश्न 11 (मध्यम). हस्तलिखित पांडुलिपियाँ किताबों की बढ़ती माँग पूरी क्यों नहीं कर पाती थीं?
उत्तर – उतारना/नकल करना बहुत खर्चीला, समयसाध्य और श्रमसाध्य था, पांडुलिपियाँ नाशुक थीं और ले जाने-रखने में भी मुश्किलें थीं।

प्रश्न 12 (कठिन). वुडब्लॉक छपाई लोकप्रिय होने के बाद भी तेज़ और सस्ती मुद्रण तकनीक की जरूरत क्यों बनी?
उत्तर – क्योंकि लगातार बढ़ती माँग को बड़े पैमाने पर और पर्याप्त तेजी से वुडब्लॉक से पूरी करना संभव नहीं था; ज़्यादा तेज़ और सस्ते उत्पादन की आवश्यकता थी।

» गुटेन्बर्ग प्रेस और मूवेबल टाइप का तकनीकी बदलाव

प्रश्न 13 (आसान). मूवेबल टाइप में 'मूवेबल' का मतलब क्या है?
उत्तर – अक्षरों के टाइप को उठाकर/घुमाकर नई लाइन या शब्द बनाना

प्रश्न 14 (आसान). गुटेन्बर्ग प्रेस में धातु के टाइप किस काम के लिए थे?
उत्तर – अलग-अलग अक्षरों से टेक्स्ट की लाइन/पेज तेजी से तैयार करने के लिए

प्रश्न 15 (मध्यम). जैतून प्रेस जैसी प्रेरणा ने छपाई में क्या मदद की?
उत्तर – दबाव (pressure) वाला तंत्र मिला, जिससे कागज़ पर साफ और तेज छाप संभव हुई

प्रश्न 16 (कठिन). क्यों वुडब्लॉक से तुलना में मूवेबल टाइप उत्पादन को ज्यादा तेज कर सकता है? दो कारण लिखो।
उत्तर – 1) टेक्स्ट बदलने पर पूरे ब्लॉक/फॉर्म को नया बनाने की जरूरत नहीं पड़ती; अक्षर टाइप को 'मूव' करके नई व्यवस्था बनती है। 2) मशीन के प्रेस-मैकेनिज्म के साथ टाइप को जल्दी कंपोज करके तेजी से पेज छपते हैं, इसलिए कुल उत्पादन बढ़ता है।

» मुद्रण क्रांति: लागत-समय कम, ज्ञान-संचार और नया पाठक वर्ग

प्रश्न 17 (आसान). छपाई से किताबों की "क़ीमत" में क्या बदलाव आया?
उत्तर – किताबों की कीमत घट गई।

प्रश्न 18 (आसान). प्रिंटिंग से प्रति किताब बनाने में लगने वाला समय-श्रम क्यों कम हुआ?
उत्तर – किताबों की छपाई की प्रक्रिया तेज और सरल हुई।

प्रश्न 19 (मध्यम). साक्षरता कम होने पर भी छपाई क्रांति का असर कैसे पड़ा?
उत्तर – जो लोग नहीं पढ़ सकते थे, वे बोलकर पढ़े जाने को सुनकर लुत्फ उठाते थे–ज्ञान फिर भी फैलता था।

प्रश्न 20 (कठिन). समझाइए कि मौखिक और मुद्रित संस्कृति के बीच "रेखा धुंधली" क्यों पड़ गई।
उत्तर – किताबें सस्ती और ज्यादा होने लगीं, पर कम साक्षर लोग भी सुनकर जुड़ने लगे। इसलिए छपी सामग्री मौखिक अंदाज़ में भी प्रसारित हुई; लोकगीत/लोककथाएँ छपकर सभाओं में गाई-सुनाई जाने लगीं–मौखिक और मुद्रित का अलगाव घट गया।

» धर्मिक विवाद और 'प्रिंट का डर'

प्रश्न 21 (आसान). 'प्रिंट का डर' में लोगों को किस बात का भय था?
उत्तर – नियंत्रण के बिना छपे विचारों के फैलने और धर्म-सत्ता की पकड़ कमजोर होने का।

प्रश्न 22 (आसान). धार्मिक विवाद छपाई से कैसे बढ़ सकता था?
उत्तर – क्योंकि धार्मिक विषयों पर लिखे जवाब/बहस ज्यादा लोगों तक तेज़ी से पहुँच सकते थे।

प्रश्न 23 (मध्यम). मार्टिन लूथर की 'छपी प्रति' और बड़े पैमाने पर छपाई से क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – चर्च में विभाजन हुआ और प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार की शुरुआत हुई।

प्रश्न 24 (कठिन). इरैस्मस के डर को एक कारण-परिणाम में लिखो: 'किताबें फैलें' तो क्या-क्या होता है?
उत्तर – किताबें फैलती हैं अलग विचार/धर्मविरोधी बातें भी पहुँचती हैं 'मूल्यवान' मानी जाने वाली मान्यताओं की सत्ता कमजोर हो सकती है इसलिए धार्मिक संस्थाएँ विरोध दबाने/पाबंदियाँ लगाने की कोशिश करती हैं।

» प्रतिरोध और प्रतिबंध: चर्च/राज्य द्वारा नियंत्रण

प्रश्न 25 (आसान). 1558 ई. से कौन-सा काम शुरू हुआ?
उत्तर – प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने का काम।

प्रश्न 26 (आसान). इन्क्वीशीशन का काम किससे जुड़ा था?
उत्तर – धर्म-विरोधी माने जाने वाले विचारों/किताबों की पहचान और सज़ा से।

प्रश्न 27 (मध्यम). चर्च/राज्य ने प्रकाशकों या पुस्तक-विक्रेताओं पर पाबंदी क्यों लगाई होगी?
उत्तर – ताकि विवादित/धर्म-विरोधी किताबें छपकर और बिककर ज्यादा लोगों तक न पहुँचें।

प्रश्न 28 (कठिन). सत्ता प्रतिबंध लगाकर रोकना चाहती थी, लेकिन विरोध फिर भी क्यों बढ़ा? दो कारण लिखो।
उत्तर – 1) लोग समझते थे कि सच/विचार रोका जा रहा है, इसलिए चर्चा और दिलचस्पी बढ़ती थी। 2) छपाई पहले ही विचारों को तेज़ी से फैलाती थी; रोक-टोक के बाद भी वही नेटवर्क और प्रतियाँ विचारों को सार्वजनिक करती रहीं।

» अठारहवीं सदी से यूरोप में लोकप्रिय व आलोचनात्मक जनसांस्कृतिक दुनिया

प्रश्न 29 (आसान). अठारहवीं सदी में सस्ती चैपबुक्स/पेनी बुक्स जैसी सामग्री का एक फायदा क्या था?
उत्तर – गरीब/आम लोग भी खरीदकर पढ़ सकते थे, इसलिए पाठक-वर्ग बढ़ा।

प्रश्न 30 (आसान). व्यंग्यचित्र (कार्टून) का असर किस पर पड़ता था?
उत्तर – आम लोगों के दिल-दिमाग़ पर, जिससे क्रांति से पहले असमानता पर सोच/नाराज़गी बढ़ती।

प्रश्न 31 (मध्यम). छपाई पर प्रतिबंध होने के बावजूद आलोचनात्मक जनसांस्कृतिक दुनिया कैसे बनी–दो कारण लिखिए।
उत्तर – साक्षरता बढ़ने से पाठक बढ़े; और सस्ती/लोकप्रिय सामग्री गाँवों तक पहुँचती रही, जिससे अलग ढंग से सोचने के मौके खुले।

प्रश्न 32 (कठिन). समझाइए कि किताबें/इमेजें आधुनिक राजनीतिक-धार्मिक दृष्टि बदलने में कैसे भूमिका निभाती थीं।
उत्तर – लोकप्रिय पाठन (उपन्यास, वैज्ञानिक/दर्शनिक किताबें) से नए विचार फैले; पत्र-पत्रिकाएँ व सार्वजनिक विमर्श में बहस हुई; और व्यंग्यचित्रों ने सत्ता/धर्म की आलोचना को आसान व प्रभावी बनाया–इस तरह लोगों का दृष्टिकोण बदला।

» उन्नीसवीं सदी: बच्चे, महिलाएँ, मजदूर और तकनीकी परिष्कार

प्रश्न 33 (आसान). उन्नीसवीं सदी में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार से कौन प्रमुख रूप से नए पाठक बने?
उत्तर – बच्चे

प्रश्न 34 (आसान). महिलाएँ उन्नीसवीं सदी में किन भूमिकाओं में ज्यादा अहम हुईं?
उत्तर – पाठिका और लेखिका

प्रश्न 35 (मध्यम). मजदूर/निम्नवर्ग को पढ़ने के लिए पुस्तकालयों का उपयोग किस उद्देश्य से हुआ?
उत्तर – उन्हें शिक्षित करने और काम के बाद सुधार व आत्म-अभिव्यक्ति के लिए समय व रास्ता देने हेतु

प्रश्न 36 (मध्यम). कौन-सी तकनीकी प्रगति तेज छपाई से संबंधित थी–और लगभग क्या उत्पादन क्षमता बताई गई है?
उत्तर – शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस; प्रति घंटे 8000 शीट तक छपाई

प्रश्न 37 (कठिन). बताइए कि 'बच्चों के लिए अनुपयुक्त' सामग्री न छापने जैसी नीति का सांस्कृतिक असर क्या हुआ?
उत्तर – लोक-कथाएँ तो छपीं, पर उम्र/नैतिक मानकों के हिसाब से उनका रूप बदल गया–किताबों की भाषा और सामग्री बच्चों के लिए 'उपयुक्त' बनाकर नए पाठक वर्ग के अनुकूल तैयार की गई।

प्रश्न 38 (कठिन). उन्नीसवीं सदी में सामाजिक बदलाव और तकनीकी परिष्कार किस तरह मिलकर पढ़ने की सामाजिक रचना बदलते हैं?
उत्तर – सामाजिक बदलाव (बच्चे, महिलाएँ, मजदूर नए पाठक बने) ने मांग बढ़ाई; तकनीकी परिष्कार (तेज़ प्रेस, ऑफ़सेट/रंगीन छपाई) ने अधिक, सस्ती और आकर्षक किताबें/पत्रिकाएँ बड़े पैमाने पर छापकर उपलब्ध कराईं–इससे पढ़ने वाला वर्ग और विविध हुआ।

» भारत में छपाई का आगमन: पहले मिशनरी, फिर औपनिवेशिक प्रेस

प्रश्न 39 (आसान). भारत में छपाई का शुरुआती चरण किससे जुड़ा बताया गया है?
उत्तर – यूरोपीय मिशनरी (पहले पुर्तगाली, फिर अन्य मिशनरी) से

प्रश्न 40 (आसान). मिशनरी प्रेस स्थानीय भाषा में छापते क्यों थे?
उत्तर – धर्म-प्रचार/संदेश को लोगों तक उनकी भाषा में पहुँचाने के लिए

प्रश्न 41 (मध्यम). 'बंगाल गज़ट' की संपादन-व्यवस्था के पीछे मकसद क्या दिखता है–व्यवसाय/स्वतंत्रता या केवल धर्म-प्रचार?
उत्तर – व्यवसायिक स्वतंत्रता/निजी उद्यम–और बाद में शासन का नियंत्रण

प्रश्न 42 (कठिन). हेस्टिंग्स द्वारा हिक्की पर मुकदमा कराने और सरकारी-सहायता वाले अख़बारों को बढ़ावा देने से प्रेस की भूमिका के बारे में क्या निष्कर्ष निकलता है?
उत्तर – औपनिवेशिक शासन प्रेस को अपने हित/छवि के अनुकूल रखने के लिए नियंत्रित और समर्थन करता था; इसलिए प्रेस का स्वरूप आर्थिक-राजनीतिक हो गया था

» धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें: पुस्तिकाएँ, अख़बार और स्थानीय भाषाएँ

प्रश्न 43 (आसान). छपी पुस्तिकाओं और अख़बारों ने धार्मिक बहस में कौन-सा बदलाव किया?
उत्तर – उन्होंने बहस की शक्ल तय की और उसे सार्वजनिक रूप से फैलाया।

प्रश्न 44 (आसान). अधिक लोगों तक पहुँचने के लिए धार्मिक सामग्री किस तरह छापी जाती थी?
उत्तर – आम बोलचाल की भाषा में।

प्रश्न 45 (मध्यम). उत्तर भारत में उलमा लोग सस्ते लिथोग्राफी प्रेस का उपयोग किस उद्देश्य से कर रहे थे?
उत्तर – धर्मग्रंथों के फारसी/उर्दू अनुवाद छापने और धार्मिक अख़बार व फ़तवे निकालकर धार्मिक स्थिति पर पकड़ बनाए रखने के लिए।

प्रश्न 46 (कठिन). प्रिंट ने धार्मिक मत-मतांतर कैसे बढ़ाए और फिर भी समुदायों को कैसे जोड़ा? (कारण लिखिए)
उत्तर – मत-मतांतर बढ़े क्योंकि अलग-अलग समूहों ने अपने-अपने तर्क/व्याख्याएँ छापकर सार्वजनिक बहस में उतारीं। जो जोड़ बना वह इसलिए हुआ क्योंकि छपा साहित्य अलग-अलग हिस्सों के लोगों को एक ही तरह की बहस में शामिल होने का मंच देता था–स्थानीय भाषा से पहुँच बढ़ती गई और संवाद बना।

» छापाख़ाने से नए लेखन रूप: उपन्यास, छवियाँ, कार्टून और जनमत

प्रश्न 47 (आसान). उपन्यास भारतीय समाज में आते-आते किस तरह बदला?
उत्तर – उसने अपनी 'ख़ास भारतीय शक्ल और शैली' अख़्तियार कर ली।

प्रश्न 48 (आसान). 19वीं सदी के अंत में दृश्य-संस्कृति क्यों बढ़ी?
उत्तर – छापेख़ानों की बढ़ती तादाद से छवियों की प्रतियाँ आसानी से बनने लगीं।

प्रश्न 49 (मध्यम). कार्टून/कैरिकेचर जनमत बनाने में कैसे मदद करते थे? एक कारण लिखो।
उत्तर – वे सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर व्यंग्य/टिप्पणी को आसान और प्रभावी तरीके से फैलाते थे, जिससे लोगों की राय बनने लगती थी।

प्रश्न 50 (कठिन). किस तरह 'साम्राज्यवादी व्यंग्यचित्र' और 'राष्ट्रवादी' चित्र अलग-अलग संदेश देते थे? 2 बिंदु लिखो।
उत्तर – साम्राज्यवादी व्यंग्यचित्र राष्ट्रवादियों का मज़ाक उड़ाते थे; राष्ट्रवादी भी साम्राज्यवादी सत्ता पर निशाना साधते थे, यानी दोनों पक्ष अपने-अपने विचार चित्रों में रखते थे।

» भारत में छपाई पर नियंत्रण: सेंसरशिप और 'वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट'

प्रश्न 51 (आसान). 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट का फोकस किस पर था?
उत्तर – देशी/vernacular भाषाओं के अख़बारों पर

प्रश्न 52 (आसान). छपाई पर नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – शासन-विरोधी विचारों/जनमत के प्रसार को रोकना

प्रश्न 53 (मध्यम). सेंसरशिप को सिर्फ पोस्टर फाड़ना मानना क्यों गलत है?
उत्तर – कानून, शर्तें, जुर्माने/कार्रवाई और अख़बार की सामग्री पर पहले से या बाद में नियंत्रण–यानी लिखाई की आज़ादी पर रोक–असल बात है।

प्रश्न 54 (कठिन). दमन के बावजूद अख़बारों/लेखकों का राष्ट्रीय आंदोलन से संबंध कैसे बना, इसे कारण सहित समझाइए।
उत्तर – प्रिंट से विचार जल्दी फैलते थे। सेंसरशिप के बावजूद लेखक तर्क देकर/विचार छापकर जनता तक बात पहुँचाते रहे, और राष्ट्रीय आंदोलन के लक्ष्यों से उनकी लेखन-सामग्री जुड़ती गई–इसलिए संबंध बना रहा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक गाँव में कोई नया सरकारी नियम पहले सिर्फ मौखिक बताया जाता है और बाद में छपी हुई नोटिसें आने लगती हैं। किस स्थिति में जानकारी जल्दी और ज्यादा लोगों तक पहुँचेगी, और क्यों?

› मौखिक व्यवस्था में सूचना व्यक्ति-व्यक्ति तक जाते-जाते बदल/देरी हो सकती है।
› छपी नोटिस में एक ही बात एक जैसा कंटेंट होती है और प्रतियाँ बनकर तेज़ी से वितरित हो सकती हैं।
› इससे ज्यादा लोगों तक एक साथ पहुँचना आसान होता है और भ्रम कम होता है।
› यानी छपाई के 'प्रसार' से समाज में सूचना के तरीक़े बदलते हैं–यही ऐतिहासिक प्रभाव है।

उत्तर – छपी हुई नोटिसों की स्थिति में जानकारी जल्दी और ज्यादा लोगों तक पहुँचेगी, क्योंकि छपाई एक जैसा कंटेंट तेजी से कई प्रतियों में वितरित कर देती है और देरी/गलतफहमी की संभावना घटती है।

उदाहरण 2. मान लो चीन की शुरुआती छपाई में लकड़ी के ब्लॉक पर उकेरे अक्षरों पर स्याही लगाकर कागज़ को रगड़ा जाता है। अगर कागज़ पतला और छिद्रित हो, तो दोनों तरफ छपाई क्यों मुश्किल होगी, और किताब बनाने की 'फोल्ड/सिल' शैली क्यों मदद करती है?

› देखो–तकनीक में कागज़ को रगड़कर/दबाकर छाप बनती है।
› अब छिद्रित/पतला कागज़ हो तो स्याही एक तरफ से दूसरी तरफ भी आसानी से जा सकती है।
› इसलिए 'दोनों तरफ छपाई संभव नहीं' जैसी दिक्कत आती है।
› जब दोनों तरफ साथ नहीं छपे, तो छपी शीटों को ऐसे जोड़ा जाता है कि पढ़ना सीधा और टिकाऊ रहे।
› इसीलिए पारंपरिक चीनी किताब 'एकॉर्डियन' शैली में किनारों को मोड़कर बाद में सिल कर बनाई जाती थी।

उत्तर – छिद्रित पतले कागज़ से स्याही/छाप दूसरी तरफ फैलने लगती है, इसलिए दोनों तरफ छपाई मुश्किल होती है। तब किताब को किनारों को मोड़कर और सिल कर ऐसे जोड़ा जाता था कि एक तरफ छपे पन्ने साथ मिलकर पढ़ने लायक किताब बन जाए।

उदाहरण 3. यूरोप में किताबों की मांग तेज़ी से बढ़ रही थी। हस्तलिखित पांडुलिपियाँ महँगी, धीमी और नाशुक थीं। बताओ, इस स्थिति में यूरोप में किताबों के बाजार को मांग पूरी करने के लिए कौन-सी दिशा में बदलाव करना पड़ा?

› मांग बढ़ने पर आपूर्ति भी बढ़ानी पड़ती है
› हस्तलिखित पांडुलिपियाँ धीमी/खर्चीली/नाशुक होने से बड़े स्तर पर उत्पादन नहीं कर पातीं
› इसलिए किताबों के उत्पादन के लिए छपाई का तरीका अपनाया गया
› पहले वुडब्लॉक (तख्ती) छपाई लोकप्रिय हुई क्योंकि यह हस्तलिखित से तेज़ थी
› फिर भी इतनी तेज़ और सस्ती छपाई की जरूरत बनी कि अगले चरण में तेज़ तकनीक का रास्ता खुला

उत्तर – यूरोप को मांग पूरी करने के लिए हस्तलिखित की जगह छपाई की ओर बढ़ना पड़ा–पहले वुडब्लॉक छपाई बढ़ी और फिर मांग को सच में तेज़ व सस्ती तरीके से पूरा करने के लिए नई तेज़ मुद्रण तकनीक की जरूरत बनी।

उदाहरण 4. मान लो एक मुद्रक के पास धातु के अक्षर (टाइप) हैं और उसने 'भारत' शब्द बनाने के लिए टाइप चुन लिए। बताओ: मूवेबल टाइप का फायदा किस तरह पेज बदलते समय उत्पादन को तेज करता है, और यह वुडब्लॉक जैसे पुराने तरीके से कैसे अलग है?

› पहले समझो कि टाइप अलग-अलग अक्षर हैं–उन्हें उठाकर नई लाइन/शब्द में लगाया जा सकता है।

› अब 'भारत' के लिए जरूरी अक्षरों के टाइप चुनो और गैली/कंपोज करके लाइन बनाओ।

› लाइन कागज़ पर प्रेस से छाप दो।

› अब अगले पेज के टेक्स्ट के लिए वही अक्षर-सेट जरूरत के हिसाब से बदल जाते हैं–मतलब अक्षरों को 'मूव' कर पेज जल्दी सेट हो जाता है।

› वुडब्लॉक में हर नए पेज/डिज़ाइन के लिए अलग ब्लॉक बनाना पड़ता है, इसलिए बदलाव धीमा और खर्चीला होता है।

उत्तर – मूवेबल टाइप में अक्षर अलग-अलग (धातु टाइप) होते हैं, जिन्हें उठाकर/घुमाकर नई पंक्तियाँ और नए शब्द बनाकर पेज जल्दी सेट किया जाता है। इससे टेक्स्ट बदलने का काम तेज हो जाता है, जबकि वुडब्लॉक में हर डिजाइन के लिए अलग फॉर्म/ब्लॉक तैयार करना पड़ता है–इसलिए उत्पादन धीमा और महँगा रहता है।

उदाहरण 5. मान लो किसी शहर में किताबें पहले बहुत महंगी थीं और कम प्रतियाँ छपती थीं। प्रिंटिंग से लागत और समय कम हो गए, इसलिए अधिक प्रतियाँ छपने लगीं। 1) इससे पहले किस तरह ज्ञान फैलता था? 2) प्रिंटिंग के बाद नया पाठक वर्ग कैसे बना? 3) साक्षरता कम होने पर भी असर कैसे पड़ा?

› पहले: लागत/समय ज्यादा होने से कम कॉपी बनती थीं, इसलिए ज्ञान का फैलाव मुख्यतः मौखिक होता (सभा/आयोजन में सुनना)।

› प्रिंटिंग के बाद: 'किताबों की कीमत घटती' और 'हर प्रति में समय-श्रम कम' होता है, जिससे बड़ी तादाद में प्रतियाँ छपती हैं।

› अधिक उपलब्धता से किताबें बाजार/समाज तक पहुँचती हैं, और अधिक लोग 'पाठक' बनते हैं–यही नया पाठक वर्ग है।

› साक्षरता कम हो तो भी जो पढ़ नहीं पाते, वे 'बोलकर पढ़े गए' को सुनकर सीखते/लुत्फ लेते हैं, इसलिए मौखिक और मुद्रित मिलकर चलते हैं।

उत्तर – 1) पहले ज्ञान मौखिक रूप से फैलता था–लोग सुनते थे। 2) छपाई से लागत/समय घटने पर ज्यादा प्रतियाँ छपती हैं, किताबें सस्ती होकर व्यापक लोगों तक पहुँचती हैं, जिससे नया पाठक वर्ग बनता है। 3) साक्षरता कम होने पर भी लोग किसी से किताब पढ़वाकर सुनते हैं, इसलिए असर फिर भी फैलता है और मौखिक-मुद्रित की दूरी कम हो जाती है।

उदाहरण 6. अगर किसी धर्मिक विषय पर छपी सामग्री बिना नियंत्रण के बहुत लोगों तक पहुँच जाए, तो 'प्रिंट का डर' के अनुसार क्या संभावित परिणाम निकल सकते हैं?

› सोचो: विचार और धार्मिक व्याख्याएँ आसानी से कॉपी होकर फैलती हैं।

› फिर जिनकी सत्ता/धर्मगुरु की पकड़ है, उन्हें डर होगा कि 'उनकी बात' ही अंतिम न मानी जाए।

› इससे धार्मिक विवाद बढ़ सकता है और 'बाग़ी/धर्म-विरोधी' विचार फैलने का भय पैदा होगा।

› ऐसे में दमन/पाबंदियाँ लगाई जा सकती हैं–जैसे जाँच (इन्क्वीज़िशन) या प्रतिबंधित सूची।

उत्तर – नियंत्रण घटने के डर से धार्मिक विवाद तेज़ होते हैं, 'धर्म-विरोधी' विचार फैलने का भय बनता है, और फिर उन्हें दबाने के लिए पाबंदियाँ/जाँच जैसी कार्रवाइयाँ की जा सकती हैं।

उदाहरण 7. एक छात्र लिखता है: "चर्च/राज्य ने छपाई से फैलते धर्म-विरोधी विचार रोकने के लिए सिर्फ किताबों को बंद कर दिया।" क्या यह बात पूरी तरह सही है? कारण देकर बताओ कि नियंत्रण में क्या-क्या शामिल था और प्रतिबंध के बावजूद क्या हुआ।

› छपाई से विचार फैलने पर सत्ता का डर समझो: नियंत्रण खोने का खतरा।

› बताओ कि चर्च/राज्य ने सिर्फ 'किताब बंद' नहीं की–उसने इन्क्वीशीशन जैसी संस्था से पहचान/सज़ा की कोशिश की।

› समझाओ कि प्रतिबंधित किताबों की सूची बनाई गई, जैसे 1558 ई. से।

› बताओ कि प्रकाशकों/पुस्तक-विक्रेताओं पर पाबंदियाँ भी थीं, ताकि किताबों का प्रसार रुके।

› फिर परिणाम लिखो: सेंसरशिप के बावजूद राष्ट्रवादी/धर्म-विरोधी विचार सार्वजनिक रूप से टिके रहे और विरोध बढ़ता गया।

उत्तर – पूरी तरह सही नहीं। नियंत्रण में इन्क्वीशीशन द्वारा पहचान/सज़ा, प्रतिबंधित किताबों की सूची (1558 ई. से), और

प्रकाशकों/पुस्तक-विक्रेताओं पर पाबंदियाँ शामिल थीं। फिर भी सेंसरशिप के बावजूद धर्म-विरोधी/राष्ट्रवादी विचार सार्वजनिक रूप से टिके रहे और विरोध बढ़ता गया।

उदाहरण 8. मान लीजिए यूरोप में छपाई पर प्रतिबंध बढ़ा दिया गया, लेकिन साक्षरता भी बढ़ रही थी और सस्ती चैपबुक्स/अख़बार गाँवों तक पहुँच रहे थे। तो इस स्थिति में 'जनसांस्कृतिक दुनिया' कैसे बनती रहेगी? 3 कारण लिखिए जो इस अध्याय के अनुसार सही बैठते हों।

› पहला: साक्षरता और स्कूलों से ज़्यादा लोग पढ़ने लगेंगे, इसलिए पाठक बढ़ेंगे।

› दूसरा: सस्ती किताबें/चैपबुक्स/पुस्तक-विक्रेता गाँवों तक पहुँचेंगे, इसलिए उपलब्धता बनी रहेगी।

› तीसरा: पत्रिकाएँ, उपन्यास, वैज्ञानिक-दर्शनिक लेखन, और व्यंग्यचित्र सार्वजनिक विमर्श/आलोचना को हवा देंगे।

उत्तर – जनसांस्कृतिक दुनिया इसलिए बनती रहेगी क्योंकि (1) साक्षरता व स्कूलों से पाठक बढ़ेंगे, (2) सस्ती छापी किताबें चैपबुक्स/अख़बार के जरिए गाँवों तक पहुँचती रहेंगी, और (3) उपन्यास, वैज्ञानिक-दार्शनिक लेखन व व्यंग्यचित्र लोगों में सार्वजनिक बहस और सत्ता/धर्म पर आलोचनात्मक सोच को बढ़ाएँगे।

उदाहरण 9. उन्नीसवीं सदी में यूरोप में जन-साक्षरता क्यों तेज हुई? दो कारण सामाजिक (किसे पढ़ने वाला बनाया) और दो कारण तकनीकी (प्रिंटिंग कैसे बदली) लिखिए।

› सामाजिक कारण 1 लिखो: प्राथमिक शिक्षा के कारण बच्चे नए पाठक बने।

› सामाजिक कारण 2 लिखो: महिलाएँ पाठिका और लेखिका–दोनों रूपों में उभरीं।

› तकनीकी कारण 1 लिखो: शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस/तेज़ छपाई से मात्रा बढ़ी।

› तकनीकी कारण 2 लिखो: ऑफ़सेट प्रेस से एक साथ छह रंगों की छपाई संभव हुई।

उत्तर – जन-साक्षरता तेज होने के सामाजिक कारण: (1) प्राथमिक शिक्षा के विस्तार से बच्चे नए पाठक बने, (2) महिलाओं की भूमिका पाठिका और लेखिका के रूप में बढ़ी। तकनीकी कारण: (1) शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस से तेज छपाई/उत्पादन बढ़ा, (2) ऑफ़सेट प्रेस से रंगीन (एक साथ छह रंग) छपाई संभव हुई।

उदाहरण 10. नीचे दिए कथनों को देखें और बताओ कि वे "पहले मिशनरी प्रेस" से जुड़े हैं या "बाद में औपनिवेशिक प्रेस" से। (i) गोवा में पुरतगाली धर्म-प्रचारकों का छपाई शुरू करना (ii) जेसुइट का कोंकणी सीखकर पुस्तकिएँ छापना (iii) ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा छापेख़ाने का आयात शुरू करना (iv) बंगाल गज़ट का निजी अंग्रेज़ उद्यम होने का दावा और बाद में मुकदमा।

› मिशनरी प्रेस में पहचान ढूँढो: धर्म-प्रचार का मकसद + स्थानीय भाषाओं में किताबें/पुस्तिकाएँ।

› औपनिवेशिक प्रेस में पहचान ढूँढो: कंपनी/शासन से जुड़ाव + अख़बार/पत्रिका में व्यवसाय/नियंत्रण।

› अब (i) और (ii) को मिशनरी के धार्मिक/स्थानीय भाषा वाले संकेत से मिलाओ।

› फिर (iii) और (iv) को कंपनी/अख़बार और शासन के कदम वाले संकेत से मिलाओ।

उत्तर – (i) पहले मिशनरी प्रेस (ii) पहले मिशनरी प्रेस (iii) बाद में औपनिवेशिक प्रेस (iv) बाद में औपनिवेशिक प्रेस

उदाहरण 11. मान लो 19वीं सदी के भारत में किसी धर्म-सुधारक को अपने विचार फैलाने थे। अगर वह केवल ऊँची विद्वत-भाषा में लिखे तो पहुँच कम होगी, लेकिन अगर वह स्थानीय/आम बोलचाल की भाषा में सस्ती पुस्तिकाएँ और अख़बार निकालता है, तो धार्मिक बहस पर क्या प्रभाव पड़ेगा? दो बिंदुओं में समझाइए।

› पहला बिंदु: स्थानीय/आम भाषा होने से ज्यादा लोग पढ़-समझ पाएँगे, इसलिए सार्वजनिक बहस में भागीदारी बढ़ेगी।

› दूसरा बिंदु: छपी पुस्तिका/अख़बार से तर्क-प्रत्युत्तर लिखित रूप में आएँगे, जिससे बहस की "शक्ल" तय होगी और संवाद तेज होगा।

उत्तर – स्थानीय/आम बोलचाल की भाषा में सस्ती पुस्तिकाएँ और अख़बार निकालने से बहस में व्यापक जन-समुदाय की भागीदारी बढ़ेगी और तर्क-प्रत्युत्तर लिखित रूप में सामने आने से सार्वजनिक बहस की शक्ल/ढांचा तय होकर धार्मिक संवाद तेज होगा।

उदाहरण 12. कार्टून/कैरिकेचर के आधार पर बताओ: क्या छापाख़ाने से जनमत बनाने में उपन्यास का रोल था या चित्रों/कार्टून का? 19वीं सदी के अंत के संदर्भ में 2 बिंदुओं में समझाओ।

› पहला बिंदु: उपन्यास/साहित्य ने पाठकों को अनुभव और मानव जीवन की विविधता से जोड़कर सोचने की आदत बढ़ाई।

› दूसरा बिंदु: 19वीं सदी के अंत में चित्रों की प्रतियाँ आसानी से बनने लगीं, और कार्टूनों ने सत्ता/समाज पर तंज-टिप्पणी करके मुद्दों को तेजी से फैलाया–यही जनमत बना।

› निष्कर्ष: जनमत का बड़ा सीधा हथियार चित्र+कार्टून बने, जबकि उपन्यास ने सोच की जमीन तैयार की।

उत्तर – जनमत बनाने में दोनों का रोल था–उपन्यास ने अनुभव और सामाजिक-भावनात्मक समझ बढ़ाई, लेकिन 19वीं सदी के अंत में सस्ती/आसानी से छपने वाली छवियाँ और कैरिकेचर-कार्टूनों ने सत्ता-समाज पर तंज-टिप्पणी फैलाकर जनमत को तेज़ी से आकार दिया।

उदाहरण 13. एक औपनिवेशिक अधिकारी अपने आदेश में कहता है कि "देशी भाषाओं के अख़बारों में छपे संपादकीय अगर शासन के खिलाफ माहौल बनाते हैं तो उन पर कार्रवाई होगी।" बताइए यह नियंत्रण किस नीति/कानून की दिशा को दिखाता है, और इसका उद्देश्य क्या था?

› पहचानो–आदेश में 'देशी भाषाओं के अख़बार' पर जोर है; यानी vernacular प्रेस पर फोकस

› फिर जोड़ो–संपादकीय/माहौल बनाने वाली लिखाई पर कार्रवाई का मतलब सेंसरशिप/नियंत्रण

› अब उद्देश्य लिखो–शासन-विरोधी विचारों का प्रसार कम करना और जनता की राय बनने से रोकना

उत्तर – यह नियंत्रण '1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' जैसी दिशा को दिखाता है (vernacular अख़बारों पर फोकस और संपादकीय पर कार्रवाई)। इसका उद्देश्य था शासन के खिलाफ माहौल बनने से रोकना और जनता के बीच विरोधी विचारों के प्रसार को नियंत्रित करना।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• परीक्षा में 'इतिहास' पूछें तो 'प्रसार' और 'सामाजिक प्रभाव' दोनों लिखो।

• वुडब्लॉक छपाई (काठ, स्याही, रगड़) और 'डायमंड सूत्रा'/'त्रिपीटका कोरियाना' को उदाहरण सहित लिखो।

• पॉइंट-फॉर्म में लिखो: माँग के साथ व्यापार मार्ग/मेले + हस्तलिखित की सीमाएँ नई तकनीक की जरूरत।

• MCQ/उत्तर में 26 अक्षर, मूवेबल टाइप और 'बढ़ी गति' तीन बिंदु लिखो।

• कारण-परिणाम लिखो: Cost-Time कम ज्यादा प्रतियाँ व्यापक पाठक oral+print का मिश्रण।

• बोर्ड एग्ज़ाम में 'प्रिंट का डर' का अर्थ और 'इन्क्वीज़िशन/पाबंदियाँ' से जोड़कर लिखो।

• इन्क्वीशीशन + प्रतिबंधित सूची + प्रकाशक-विक्रेता पाबंदी–तीनों पॉइंट लिखो।

• अंक के लिए 'कार्टून/पत्र-पत्रिका/उपन्यास' और 'सस्ती किताबों से पहुँच'–दोनों कारण लिखना याद रखें।

• उत्तर में 2 सामाजिक + 2 तकनीकी बिंदु ज़रूर लिखो–तभी पूरे अंक मिलते हैं।

• बोर्ड में हमेशा 'मकसद' लिखो: पहले धर्म-प्रचार, बाद में शासन-नियंत्रण/व्यापार।

• उत्तरी/दक्षिणी उदाहरण लिखें: देवबंद-फतवे, रामचरितमानस के छपे संस्करण–दोनों से 'स्थानीय भाषा + प्रिंट का प्रभाव' दिखाइए।

• 19वीं सदी के अंत में 'दृश्य-संस्कृति' और 'कार्टून/कैरिकेचर' को कारण-परिणाम सहित लिखो।

• उत्तर में लिखो: (1) कानून/साल, (2) किस पर फोकस, (3) उद्देश्य, (4) दमन के बावजूद विरोध/परिणाम।

एक नज़र में रिवीज़न

› छपाई = यात्रा + प्रसार + समाज पर असर

› - चीन: Block+Ink+Rub; जापान: पाठ+चित्र; कोरिया: बड़े वुडब्लॉक ग्रंथ

› - मांग बढ़ी मेले/विक्रेता हस्तलिखित नहीं चला वुडब्लॉक/नई तकनीक

› जैतून प्रेस धातु टाइप अक्षर 'मूव' तेज छपाई
› - लागत-समय घटा ज्यादा छपी सस्ते पाठक + पढ़ने की संस्कृति
› नियंत्रण घटे = धार्मिक विवाद/दमन बढ़े
› - इन्क्वीशीशन, सूची, पाबंदी–और फिर भी विरोध बढ़ा।
› साक्षरता+सस्ती किताबें आम पाठक आलोचनात्मक जनमत
› बच्चे-प्राइमरी, महिलाएँ-लेखिका, मजदूर-पर्चे; प्रेस-तेज़+रंग।
› मिशनरी: भाषा में धर्म-प्रचार; औपनिवेशिक: व्यापार+शासन का असर।
› - "कागज़ = मंच": स्थानीय भाषा से सार्वजनिक धार्मिक बहस
› उपन्यास: अनुभव; चित्र: फैलाव; कार्टून: तंजजनमत
› - 1878: वर्नाक्युलर अख़बारों पर नियंत्रण, उद्देश्य–विरोधी जनमत रोकना